विश्व के महान शिक्षाशास्त्री

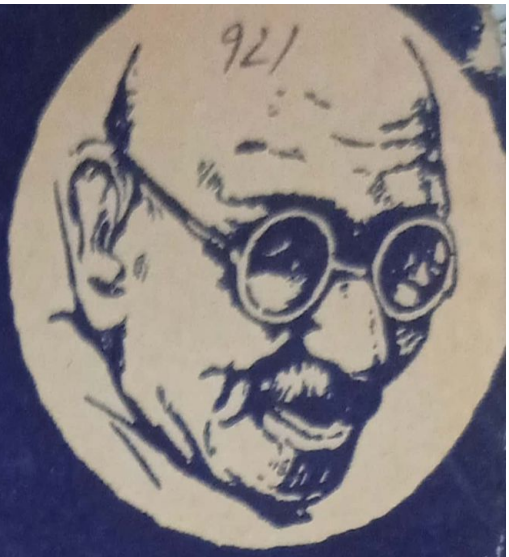

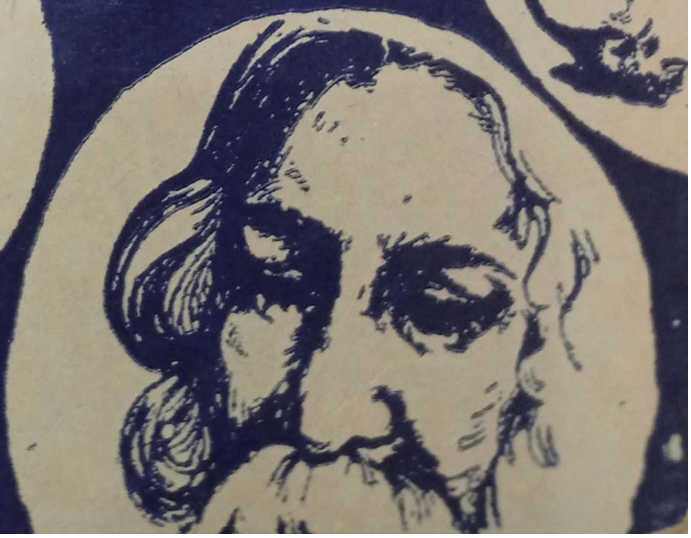

जयजयराम शाक्य

921

अनुक्रम

पहला अध्याय : महान प्रकृतिवादी रूसो ९

जीवन-परिचय : जन्म एवं बाल्यकाल—शिक्षा-दीक्षा—बोसी ग्राम में—जीवन के कटु अनुभव—साहित्यिक जीवन—प्रमुख रचनाएं। **रूसो का जीवन-दर्शन** : जीवन-दर्शन की पृष्ठभूमि—जीवन-दर्शन के प्रमुख तत्त्व। **रूसो का शिक्षा-दर्शन** : शिक्षा का अर्थ—शिक्षा का उद्देश्य—रहस्यवादी अध्यापन-प्रणाली—शिक्षक और शिक्षण-पद्धति—पुस्तकीय ज्ञान का विरोध—बाल-केन्द्रित शिक्षा—शारीरिक शिक्षा आवश्यक—व्यक्ति अधिक महत्त्वपूर्ण—अनुशासन के प्रति दृष्टिकोण—पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण—शिक्षा केवल उच्च वर्ग के लिए—निषेधात्मक शिक्षा—धनात्मक शिक्षा। **रूसो की शिक्षा-व्यवस्था** : शैशवावस्था—बाल्यावस्था—किशोरावस्था—युवावस्था—नारी-शिक्षा। **रूसो की शिक्षा-पद्धति की समीक्षा** : इस शिक्षा-पद्धति के दोष—इस शिक्षा-पद्धति के गुण—बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त एवं रूसो। **उपसंहार**।

दूसरा अध्याय : महान शिक्षाविद् पेस्टालॉजी ३७

जीवन-परिचय : जन्म एवं बाल्यकाल—शिक्षा-दीक्षा—न्यूहाफ में—शिक्षा-संबंधी प्रयोग—प्रमुख रचनाएं। **पेस्टालॉज़ी का जीवन-दर्शन** : जीवन-दर्शन की पृष्ठभूमि—सामाजिक दर्शन—आदर्शवाद—प्रकृतिवाद। **पेस्टालॉज़ी का शिक्षा-दर्शन** : शिक्षा का अर्थ एवं उद्देश्य। **पेस्टालॉज़ी की शिक्षण-पद्धति** : इस पद्धति के मूल तत्त्व—'आश्वांग', अर्थात् स्वानुभूति की विधि—प्रत्यक्ष पदार्थों द्वारा शिक्षा—निरीक्षण-विधि—विश्लेषण से संश्लेषण—शिक्षा को मनोवैज्ञानिक बनाना—विभिन्न विषयों का शिक्षण—पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण—बालक के प्रति दृष्टिकोण—शिक्षक के प्रति दृष्टिकोण—अनुशासन के प्रति दृष्टिकोण। **इस शिक्षण-पद्धति का मूल्यांकन** : इस शिक्षण-पद्धति की विशेषताएं—इस पद्धति के दोष—पेस्टालॉज़ी का प्रभाव। **उपसंहार**।

तीसरा अध्याय : शिक्षा-मनोविज्ञान का जन्मदाता हरबार्ट ६१

जीवन-परिचय : जन्म एवं बाल्यकाल—शिक्षा-दीक्षा—प्रमुख रचनाएं।

हरबार्ट का जीवन-दर्शन : अध्यात्मवाद—विश्व : सत्य एवं अपरिवर्तनशील—विचार-सिद्धान्त—आन्तरिक स्वतन्त्रता—विश्व का सौन्दर्य-बोधक प्रदर्शन। **हरबार्ट का मनोविज्ञान** : भाव-सिद्धान्त—पूर्वानुवर्ती ज्ञान का सिद्धान्त—रुचि एवं बहुमुखी रुचि का सिद्धान्त—सांस्कृतिक युग का सिद्धान्त—हरबार्ट का विचार-चक्र—मस्तिष्क-मनोविज्ञान। **हरबार्ट का शिक्षा-दर्शन** : पृष्ठभूमि—शिक्षा का उद्देश्य—पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण। **हरबार्ट की अध्यापन-विधि** : रुचि—पूर्वानुवर्ती ज्ञान—केन्द्रीकरण एवं समन्वय—नियमित पांच पद—विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक विधि—अनुशासन के प्रति दृष्टिकोण। **इस शिक्षण-पद्धति का मूल्यांकन** : प्रमुख दोष—प्रमुख विशेषताएं। **उपसंहार**।

चौथा अध्याय : किंडरगार्टन का जन्मदाता फ्रोबेल ७८

जीवन-परिचय : जन्म एवं बाल्यकाल—शिक्षा-दीक्षा—अध्यापन-कार्य—इवरडन में अध्ययन एवं प्रयोग—प्रमुख रचनाएं। **फ्रोबेल का शिक्षा-दर्शन** : एकता का सिद्धान्त—आत्मक्रियाशीलता का सिद्धान्त—सामाजिकता का सिद्धान्त। **फ्रोबेल का जीवन-दर्शन** : शिक्षा-दर्शन की भूमिका—शिक्षा का अर्थ—शिक्षा के उद्देश्य—फ्रोबेल की शिक्षा-पद्धति—पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण—बालक के प्रति दृष्टिकोण—शिक्षक के प्रति दृष्टिकोण—शिक्षा-संगठन के प्रति दृष्टिकोण। **किंडरगार्टन पद्धति** : किंडरगार्टन की विशेषताएं—उपहार और उनके भेद—क्रिया-गीत—क्रिया-कहानियां—मातृ-खेल एवं शिशु-गीत। **किंडरगार्टन पद्धति की समीक्षा** : इस पद्धति के दोष—इस पद्धति के गुण—फ्रोबेल की देन—अनुशासन के प्रति दृष्टिकोण—बुनियादी शिक्षा एवं फ्रोबेल। **उपसंहार**।

पांचवां अध्याय : महान शिक्षाशास्त्री मारिया माण्टेसरी १०३

जीवन-परिचय : जन्म एवं शिक्षा-दीक्षा—शिक्षा-सम्बन्धी प्रयोग एवं अनुभव—विदेश-यात्रा—प्रमुख रचनाएं : **माण्टेसरी के विचार** : दार्शनिक—वैज्ञानिक—बालक-सम्बन्धी विचार। **माण्टेसरी का शिक्षा-दर्शन** : शिक्षा का अर्थ एवं उद्देश्य—पाठ्यक्रम एवं पाठ्यवस्तु—शिक्षिका एवं विद्यालय—अनुशासन एवं श्रम—माण्टेसरी के शिक्षा-सिद्धान्त—माण्टेसरी-पद्धति की शिक्षण-विधि—प्रारम्भिक पाठ्यविषयों का शिक्षण। **माण्टेसरी-पद्धति की आलोचना** : गुण—दोष—माण्टेसरी की देन—माण्टेसरी-पद्धति एवं किंडरगार्टन पद्धति। **उपसंहार**।

छठा अध्याय : आधुनिक शिक्षा और जॉन डीवी १२०

जीवन-परिचय : जन्म एवं शिक्षा-दीक्षा—प्रमुख रचनाएं। **डीवी के दार्शनिक**

विचार : दर्शन एवं शिक्षा का सम्बन्ध—परिवर्तनशील विश्व—जीवन एक सतत प्रवाह—ज्ञान एवं अनुभव का सम्बन्ध—सोचने की प्रक्रिया के लिए आवश्यक स्थितियां। **डीवी के शिक्षा-सिद्धान्त** : शिक्षा का उद्देश्य—शिक्षा की परिभाषा—जीवन एवं शिक्षा—समाज एवं शिक्षा—शिक्षा के लिए आवश्यक सामाजिक व्यवस्था—रुचि एवं शिक्षा—प्रगतिशील शिक्षा—प्रगतिशील शिक्षालय। **शिक्षा का पाठ्यक्रम**। **शिक्षण-पद्धति** : पांच विशेषताएं—अनुशासन-सम्बन्धी विचार—डीवी तथा हरबार्ट और फ्रोबेल। **उपसंहार**।

सातवां अध्याय : शिक्षाशास्त्री रवीन्द्रनाथ टैगोर १३१

जीवन-परिचय : जन्म और बाल्यकाल—शिक्षा-दीक्षा—शैक्षणिक प्रयोग—शांतिनिकेतन—विश्वभारती—प्रमुख रचनाएं। **टैगोर का जीवन-दर्शन** : वेदान्तवाद—आदर्शवाद—समाजवाद—राजनीतिक दर्शन। **टैगोर का शिक्षा-दर्शन** : शिक्षा का अर्थ एवं उद्देश्य—शिक्षा में प्रकृतिवाद—शिक्षा में व्यक्तिवाद—शिक्षा में आदर्शवाद—प्राच्य एवं पाश्चात्य संस्कृतियों का समन्वय—टैगोर की शिक्षण-पद्धति—शिक्षक एवं विद्यार्थी—धार्मिक शिक्षा—शिक्षा एवं परीक्षा—शिक्षा एवं राजनीति—अनुशासन—प्रौढ़-शिक्षा, सहशिक्षा एवं स्त्री-शिक्षा—शिक्षा का माध्यम—टैगोर तथा गांधी—टैगोर की देन। **उपसंहार**।

आठवां अध्याय : बुनियादी शिक्षा के प्रणेता महात्मा गांधी १४५

जीवन-परिचय : जन्म एवं बाल्यकाल—विद्यार्थी-जीवन—राजनीतिक गतिविधि की भूमिका—शैक्षणिक प्रयोग—प्रमुख रचनाएं। **गांधीजी का जीवन-दर्शन** : एकेश्वरवादिता का सिद्धान्त—सत्य, अहिंसा एवं प्रेम—गांधीजी का मानवतावाद—गांधीजी का धर्म-दर्शन—गांधीजी का अर्थ-दर्शन—गांधीजी का राजनीतिक-दर्शन—श्रम का महत्त्व—सर्वोदयी समाज। **गांधीजी का शिक्षा-दर्शन** : शिक्षा-दर्शन की पृष्ठभूमि—शिक्षा का अर्थ—गांधीवादी शिक्षा के उद्देश्य—गांधीजी के शिक्षा-सिद्धान्त—शिक्षा एवं परीक्षा—शिक्षक एवं विद्यार्थी—शिक्षा के विभिन्न स्तर। **गांधीवादी पद्धति की आलोचना** : इस शिक्षा-पद्धति के गुण—इस शिक्षा-पद्धति के विरुद्ध आरोप। **विभिन्न शिक्षाशास्त्री एवं गांधीजी**: महात्मा गांधी एवं रूसो—महात्मा गांधी एवं पेस्टालॉज़ी—महात्मा गांधी एवं जॉन डीवी। **उपसंहार**।

नवां अध्याय : शिक्षाशास्त्री विनोबा भावे १७४

जीवन-परिचय : जन्म और बाल्यकाल—शिक्षा-दीक्षा—राजनीति में प्रवेश। **विनोबाजी का जीवन-दर्शन** : सत्य, अहिंसा एवं प्रेम—भारतीय संस्कृति

CamScanner

—स्वावलम्बन एवं नियमितता— धार्मिक दृष्टिकोण— रचनात्मक कार्य एवं सर्वोदय । **विनोबाजी का शिक्षा-दर्शन :** नई तालीम का अर्थ—शिक्षण-पद्धति—विनोबाजी एवं पाठशाला—शिक्षक एवं विद्यार्थी—परीक्षा-प्रणाली—पुस्तक और जीवन—अनुशासन—धार्मिक शिक्षण । **उपसंहार ।**